।। अरबळ को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ अरबळ को अंग लिखंते ||

|| रेखाता ||

च्यार जुग जाय जब चोकड़ी अेक हे || इन्द की आव मे केहेत भाया ||
पाँच पचीस पचास मे आठनी || निगम मे अर्थ सो संत गाया ||
च्यार पर तीन अर तीन पर च्यार रे || इन्द अे पड़त दिन अेक जाई ||
अें बड़ा दिन का मास कर बरस रे || दुज की आव सो बरस ताई ||
दुज की आवतां इस का तीन दिन || सगत सिणगार में ईस जाई ||
सगत सिणगार बोहो सज केती गई || ब्रम्ह को टुक नहि ध्यान व्कायो ||
दास सुखराम कछु बार नहि पार रे || सब ही संत मिल नाम गायो ||१||

आर्बल(आयु)एक चौकडी यानी सतरह लाख अतठाइस हजार वर्ष सतयुगके(१७,२८,०००) ,बारह लाख छिआनवे हजार वर्ष त्रेतायुग के (१२,९६,०००), द्वापर युग के आठ लाख चोषट हजार वर्ष(८,६४,०००)और कलीयुगकी आयु चार लाख बत्तीस हजार वर्ष की होती है (४,३२,०००)। ऐसी एक चौकडी मे त्रेचालीस लाख बीस हजार की होती है(४३,२०,०००)। ये ऐसे वर्ष को बहत्तर चौकडीसे गुण करने पर इन्द्र की आयु होती है । यानी एकत्तीस कोटि दस लाख चालीस हजार वर्ष इन्द्र की आयु होती है(१,१०,४०,०००)। ऐसे अठ्ठाइस इंद्र जाते तब ब्रम्हाका एक दिन और एक रात होती । ब्रम्हाका एक दिनका वर्ष आठ अब्ज सत्तर कोटी एक्याण्णव लाख बीस हजार वर्ष होते(८,७०,५१,२०,०००)। ऐसे महीनेके दिनको तीससे गुना तो ब्रम्हाका एक दिनका वर्ष आठ अब्ज सत्तर कोटी एक्याण्णव लाख बीस हजार वर्ष है,ऐसे महीनेके दिनको तीससे गुना तो ब्रम्हाका एक महीनेके वर्ष दो निखर्व,छः खरब,एक अब्ज,सताइस कोटी,छत्तीस लाख वर्ष(२,०६,१,२७,३६,००००)। एक बरसके बारा महीनेसे गुना तो ब्रम्हाका वय एक बरसका वर्ष तीन महापद्म,एक निखर्व,पाच अब्ज,अठ्ठाइस कोटी,बत्तीस लाख वर्ष ब्रम्हाका वय रहता । ऐसे सौ वर्ष ब्रम्हाके आयुष्य के वर्ष तीन जल्दी,एक शंकु ,तीन महापद्म, पांच निखर्व,दोन खर्व,आठ अब्ज,बत्तीस कोटी वर्ष । महादेवके एक वर्षके वर्ष तीन मध्य,सात अंत्य,सहा जल्दी,दोन शंकु,तीन महापद्म,तीन निखर्व,नउ खर्व,आठ अब्ज,चालीस कोटी । इसको एक सौ से गुना तो महादेव की उम्र या शक्ति को श्रृंगार करने जितने वर्ष लगते है । सैतीस परार्ध,छःमध्य,दो अंत्य,तीन जल्दी,तीन शंकू,नौ महापद्म,आठ निखर्व,चार खर्व वर्ष । ऐसी शक्ति कितनी ही चली जाती है तब सतस्वरुप ब्रम्ह का ध्यान टुक सा(थोडासा)भी नही होता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज ने कहा कि सभी संत जो रामराम का भजन करके सतस्वरुप राम मे मिल गये उस सतस्वरुप राम का कोई कुछ वार पार नही है ।।१।।

|| इति आर्बल का अंग सम्पूर्ण ||